प्रकाशनार्थ

गोरखपुर, 06 सितम्बर। गोरखनाथ मन्दिर में **युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं पुण्यतिथि एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि समारोह** के अन्तर्गत **''सामाजिक समरसता भारतीय संस्कृति का प्राण है''** संगोष्ठी में मुख्य अतिथि दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या के **महन्त सुरेशदास जी महाराज** ने कहा कि दुनिया की श्रेष्ठतम हिन्दू संस्कृति, श्रेष्ठतम हिन्दू जीवन पद्धति एवं श्रेष्ठतम् सामाजिक व्यवस्था में जाति के आधार पर ऊँच–नीच की भावना और छुआछूत एक कोढ़ है। धार्मिक संकीर्णता भी हमारे समाज को रूढ़िगत बनाता है। देश के सन्त–महात्मा एवं धर्माचार्य तो स्वतंत्रता के बाद से ही सामाजिक समरसता का अभियान छेड़ दिया। ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने तो इस विषय पर व्यापक जनजागरण का अभियान चलाया। किन्तु अधिकांशतः राजनीतिज्ञों ने **'वोट बैंक'** के कारण एक तरफ तुष्टीकरण की नीति अपनायी तो दूसरी तरफ हिन्दू समाज में जातीय वैमनस्यता की खाई और चौड़ी की। उन्होनें कहा कि हम **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** के वाहक है। हिन्दू संस्कृति तो कण–कण में भगवान का दर्शन कराती है। जहॉ अद्वैत वेदान्त का दर्शन गूँजा, उस संस्कृति में छुआछूत एवं धार्मिक संकीर्णता जैसी अमानवीय रूढ़िगत व्यवस्था की स्वीकृति कैसे की जा सकती है। हिन्दू समाज अपनी संस्कृति के शाश्वत पक्षों को पहचाने, संस्कृति को स्वीकारे और सामाजिक विकृति की त्याग करें। भारत माता का हर वह पुत्र जो भारतीय परम्परा का वाहक है वह एक समान है, एक जैसा है, न कोई ऊँचा है न कोई नीचा है।

मुख्य वक्ता शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री एवं शिक्षा बचाओ आन्दोलन, नई दिल्ली के सूत्रधार **श्री अतुल भाई कोठारी जी** ने कहा कि देश की सभी समस्याओं के समाधान का मूल सामाजिक समरसता में निहित है। हम उस आध्यात्मिक संस्कृति के वारिस है जिसने कण–कण में परमात्मा का वास तथा सभी प्राणियों में उसी परमात्मा का अंश माना है। ऐसे में जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद सहित नारी–पुरुष, अमीर–गरीब, ऊँचनीच जैसे भेदभाव हमारी संस्कृति का हिस्सा नही हो सकता। दैनन्दिनि जीवन में जो समाज गो–ग्रास निकालता हो, पक्षियों का दाना खिलाता हो, चीटियों का आटा खिलाता हो वह समाज अपनो को ही अछुत कैसे मान सकता है। ऐसे में महापुरूषों की यह वाणी हमारे लिए वरैण्य है कि यदि छुँआछूत यदि पाप नही है तो दुनिया में कुछ भी पाप नही। आज शिक्षा व्यवस्था और वर्तमान पाठ्य–पुस्तकें भी सामाजिक विषमता पैदा करने वाली है। समरसता को तोड़ने वाली है। अतः भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को भारतीय शिक्षा के पाठ्यक्रमों का हिस्सा बनाना होगा। जबतक समरस समाज एक होकर आगे नही बढ़ेगा तबतक भारत के विश्वगुरु बनने का सपना दिवास्वप्न ही रहेगा।

उन्होंने आगे कहा कि 'छुआछूत मिटाओं और देश बचाओ' का मंत्र फूँकना होगा। छुआछूत की भावना और धार्मिक संकीर्णता से हिन्दू समाज कमजोर होता है, राष्ट्र कमजोर होता है। सामाजिक समरसता को व्यवस्था परिवर्तन का हिस्सा बनाना होगा और सामाजिक समरसता अभियान के लिए शिक्षण संस्थाओं को आगे आना होगा। हिन्दू समाज में उँचनीच, छुआछूत, नारी–पुरूष जैसी विषमताओं का कोई स्थान नही है। सनातन हिन्दू धर्म ने कभी भी सामाजिक विषमता को स्थान नही दिया। सनातन धर्म की आर्ष परम्परा के ग्रन्थों के अनेक मंत्रों एवं अनेक ग्रन्थों की रचना उन्होंने की जिन्हे बाद में समाज में अछूत मान लिया गया। हमारे यहॉ वर्ण व्यवस्था थी किन्तु छुआछूत नही था। छुआछूत मध्यकाल के मुस्लिम शासन काल की देन है। मुस्लिम काल में हिन्दू समाज में अनेक विकृतियॉ उत्पन्न हुई और कालान्तर में वे रूढ़िग्रस्त हो गई। किन्तु अब समय आ गया है कि हमें समतायुक्त, शोषणमुक्त समाज की रचना करना चाहिये। भारत में सामाजिक विषमता की विषबेली विकसित हुई तो भगवान बुद्ध से रमणि महर्षि, स्वामी रामानन्द, नाथ पंथ की पूरी परम्परा, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर और ब्रह्मलीन युगपुरूष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज तथा ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज तक की महात्माओं, संतो की ऐसी परम्परा मिलती है जो सदा इसके खिलाफ संघर्ष करते रहे हैं। भारत मे धर्मगुरुओं की एक श्रेष्ठ परम्परा रही है जो संस्कृति में आई विकृति के खिलाफ सदा लड़ते रहे है। छुआछूत के खिलाफ भारत में जारी संघर्ष का नेतृत्व आज भी गोरक्षपीठ कर रहा है। यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है भारत मानवता की भूमि है। भारत देवभूमि है और भारत एक समरस, संवेदनशील और सभी में एक ही परमात्मा का अंश मानने वाले दर्शन की भूमि है। अतः कालान्तर में आयी छुआछूत जैसे विकृति का भारतीय समाज में होना एक अभिशाप है। उन्होंने आगे कहा राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए सम्पूर्ण हिन्दू समाज को एक करने का योगी आदित्यनाथ जी जो प्रयास कर रहे है, देश का सन्त समाज उनका नेतृत्व स्वीकार करता है। हम सभी हिन्दू समाज की रूढ़िगत व्यवस्थाओं को ध्वस्त कर भारत में एक ही जाति की स्थापना में लगे है, वह हिन्दू जाति होगी।

अध्यक्षता कर रहे महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पूर्व कुलपति प्रो0 यू0पी0सिंह ने कहा कि हिन्दू समाज को अपने व्यवहार से यह सिद्ध करना होगा कि हम दुनिया के श्रेष्ठतम समाज की

पुनर्स्थापना में सक्षम है। दुनियां में भौतिकता और आतंक से कराह रही **'मानवता'** भारत की ओर अपेक्षा भरी नजरों से देख रही है। सत्य सनातन हिन्दू संस्कृति के शाश्वत मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा से ही मानवता की रक्षा सम्भव है। अतः हिन्दू समाज अपने समाज की विकृतियों को दूर करें और राजनीतिक षड्यंत्रों को समझें। हिन्दू समाज को यदि जीवित रहना है तो छुआछूत को समाप्त करना ही होगा।

विशिष्ट वक्ता अरैल, प्रयाग से पधारे स्वामी गोपाल जी महाराज ने कहा कि राष्ट्रीय एकता–अखंडता और आधुनिक भारत के निर्माण हेतु आवश्यक है समरस अथवा छुआछूत विहीन समाज की रचना। गुरु गोरक्षनाथ ने छुआछूत के खिलाफ हजारो वर्ष पहले सामाजिक क्रान्ति का उद्घोष किया था। आज भी गोरक्षपीठ सामाजिक क्रान्ति की उस परम्परा को आगे बढ़ाने में लगी हुई है। भेदभाव और छुआछूत भारत की संस्कृति नहीं विकृति है।

बड़े भक्तमाल अयोध्या से पधारे श्रीरामतीरथदास जी महाराज ने कहा भगवान श्रीराम सामाजिक समरसता के प्रतीक है। एक चक्रवर्ती सम्राट केवट को सम्मानित करते है और केवट कहता है कि हम और आप एक विरादरी के हे। शबरी के जूठे बेर भगवान खाते हैं, जटायु को तारते है। ऐसी सामाजिक समरसता से मुक्त हिन्दू समाज की पुर्नप्रतिष्ठा करके ही हम समृद्ध और समर्थ भारत का निर्माण कर सकते है। हिन्दू समाज छुआछूत मिटाए और धर्मान्तिरत हो चुके अपनों के घर वापसी का मार्ग प्रशस्त करें।

विशिष्ट वक्ता प्राचीन इतिहास विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के **प्रो0 दिग्विजयनाथ मौर्य** ने कहा कि हर देश का एक राष्ट्रीय समाज होता है। भारत का राष्ट्रीय समाज हिन्दू समाज है। राष्ट्रीय समाज जब कमजोर होता है तो राष्ट्र कमजोर होता है। राष्ट्र समाज का जब पतन होता है तो राष्ट्र का पतन होता है। भारत की गुलामी और पतन के लिए वाहय एवं विदेशी ताकते जितनी जिम्मेवार है है उससे कम जिम्मेवार हिन्दू समाज की रूढ़िगत व्यवस्था नही है। **'मुझे मत छूओ'** अर्थात् छुआछूत की भावना से भारत का राष्ट्रीय समाज कमजोर हुआ। हमारे धर्माचार्यो ने सामाजिक समरसता के निरन्तर प्रयास किये है। गुरू गोरखनाथ, शंकराचार्य, रामानन्दाचार्य से लेकर ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज और गोरक्षपीठ के ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में धर्माचार्यो ने हिन्दू समाज की इस सामाजिक कोढ़ के खिलाफ अनवरत शंखनाद फूॅका है। हिन्दू समाज राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की रक्षा हेतु एक होकर अपने समाज की रूढ़ियों के खिलाफ खड़ा हो।

अयोध्या से पधारे **श्री रामशंकरदास जी महाराज** ने कहा कि भारत की जाँति–पाँति और छुआछूत की व्यवस्था ने न केवल भारतीय समाज को अपितु दुनिया की मानवता को नुकसान पहुॅचाया है। हमारे समाज के इन्हीं रूढ़िग्रस्त व्यवस्थाओं ने हमको कमजोर बना दिया। आर्य समाज ने हिन्दू समाज की एकता के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्देशन में अभियान चलाया। आज भी छुआछूत को जड़ से उजाड़कर फेकने की आवश्यकता है। उन्होनें आगे कहा कि हम एक श्रेष्ठ संस्कृति के एवं एक श्रेष्ठ परम्परा के वाहक हैं। **'वसुधैव कुटुम्बकम'** का संदेश देने वाली भारतीय संस्कृति में जाति के आधार पर ऊॅच–नीच छुआछूत एक विकृति हैं एक रस हिन्दू समाज ही एक संगठित राष्ट्र का निर्माण कर सकता है।

समारोह का शुभारम्भ दोनों ब्रह्मलीन महाराज जी को पुष्पांजलि, वैदिक मंगलाचरण एवं गोरक्षाष्टक पाठ के साथ हुआ। महाराणा प्रताप महिला पी0जी0 कालेज, रामदत्तपुर गोरखपुर एवं महाराणा प्रताप सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, रामदत्तपुर एवं महाराणा प्रताप कृषक इण्टर कालेज जंगल धूसड़ के प्रधानाचार्यो एवं शिक्षकों ने माल्यार्पण के साथ अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अविनाश प्रताप सिंह ने किया।

पुण्यतिथि समारोह में आज

युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत कल **07 सितम्बर,2017** को प्रातः 10.30 बजे **'भारतीय संस्कृति में गो–सेवा का महत्व'** विषयक संगोष्ठी अपराह्न 3.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक वाल्मीकि रामायण पर आधारित **'श्रीराम कथा' का आयोजन।**